शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अब्दुल बिस्मिल्लाह और मंजूर एहतेशाम के साहित्य में पारिवारिक संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन

सुरेश कुमार (शोधार्थी)
बी.आर.अम्बेडकर ओपन विश्विद्यालय
हैदराबाद, तेलंगाना, भारत

पारिवारिक संबन्धों में सबसे सशक्त संबन्ध है दाम्पत्य जीवन। लेकिन कभी-कभी ऐसे संदर्भ भी आते हैं जब पति-पत्नी का आपसी संघर्ष होता है। बिस्मिल्लाह जी और मंजूर एहतेशाम के उपन्यासों में प्रस्तुत संघर्ष का चित्रण अधिक मात्रा में दिखाई देता है। डॉ.राधाकृष्णन ने पति-पत्नी संघर्ष के कारण को इस तरह स्पष्ट किया है, "मनुष्यों में आपसी झगड़ों का अंकुर उस पद्धति से पैदा होता है, जिसके अनुसार विभिन्न समूहों के व्यक्ति दूसरों के संबन्ध में अपनी धारणा बना लेते हैं। कर्तव्य और न्याय के अपने आदर्शों को दूसरों से श्रेष्ठ समझते हैं।"1 दोनों समकालीन साहित्यकारों के साहित्य में परिवारिक संघर्ष के आपसी संघर्ष का मूल कारण यही वैचारिक भिन्नता है। भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी संबन्ध को पवित्र माना जाता है। लेकिन कभी-कभी पुरुष वर्ग द्वारा नारी का शोषण होता है। पुरुष नारी को अबला और कमज़ोर समझता है। वह कभी-कभी धर्म की आड़ लेकर नारी पर अन्याय-अत्याचार करता है।

'जहरबाद' उपन्यास में पति-पत्नी का आपसी संघर्ष देख सकते हैं। यह उपन्यास लेखक का आत्मकथात्मक उपन्यास है। कथानायक बचपन से ही माता-पिता के संघर्ष और लड़ाई को देखता आ रहा है। एक दिन अम्माँ अब्बा से कहती है, "काम न धन्धा बस दिन-रात बंसी के पीछे खाली मछली खाते पेट भरेगा..... लाज नहीं आती कि महरिया कमाये और मरद बैठकर खाये।"2 अम्मा की इस बात को अब्बा नहीं सह सके। "बंसियां उन्होंने आँगन में फेंक दी और भीतर जाकर अम्माँ को पीटने लगे।"3 "अम्मा टोपरा उठाकर गाँव-गाँव में गुड़, बीड़ी तथा तमाखू आदि चीजें भरकर गवई करती थी और पैसे लाती थी। पर अब्बा केवल मछली पकड़ने का काम करते थे। एक दिन अम्मी अब्बा पर किसी बात से नाराज़ होकर उखड़ जाती है और कुछ उलटी-सीधी बातें कहती है। तब अब्बा चुपचाप यह बातें सुनते रहते हैं, लेकिन अचानक अब्बा को क्रोध आता है। यहाँ हमें पति-पत्नी का आपसी संघर्ष दृष्टिगोचर होता है। इसी उपन्यास में कितनी ही घटनाएँ हैं अम्मा और अब्बा के आपसी तनाव, संघर्ष, मारपीट और गाली-गलौज की। शुरुआत में ही लेखक अम्मा के प्रति अब्बा के दुर्व्यवहार का संकेत देता है। कभी-कभी दोनों के बीच के संघर्ष का दृश्य छोटा-मोटा युद्धस्थल बन जाता है। "मैं पात्र यानी अब्बा-अम्मा के बेटे की लाचारी है, निर्विकार भाव से इस घरेलू युद्ध को देखने की। अब्बा यानी एक पुरुष (पति) का अपनी स्त्री (अम्मा) के प्रति किये गये अत्याचार के कुछेक दृश्य पाठकों के सम्मुख उपस्थित कर लेखक ने न्याय की पुकार उपस्थित की है। ईद के शुभ अवसर पर हुए अम्मा और अब्बा के झगड़े को

देखकर कथा नायक कहता है, "ईद आयी तो अपने साथ कटुता लेकर आयी। पता नहीं किस बात को लेकर ऐन ईदवाले दिन अब्बा और अम्मा में लड़ाई हो गयी।"4 एक बालक की इच्छा सिर्फ इतनी होती है कि ईद का त्योहार धूमधाम से मनाये, लेकिन अम्मा और अब्बा में छोटे-मोटे कारणों को लेकर झगड़ा होता है।

'समर शेष है' उपन्यास में पति-पत्नी संघर्ष का चित्रण अधिक मात्रा में मिलता है। कथा-नायक रहमतुल्लाह से प्रश्न करता है, "गुड्डू की अम्मा इतनी मेहनत करती है, तुम कोई काम नहीं करते ?"5 कथा-नायक का प्रश्न सुनने के पश्चात् रहमतुल्ला खामोश रहता है और उसकी बीवी बोलने लगती है, "ये कुछ नहीं करते भैया, मैं कुछ कहती हूँ तो भद्दीभद्दी गालियाँ देते हैं और ज़्यादा कुछ करती हूँ तो डंडा खाना पड़ता है। क्या करूं ?6 रहमतुल्ला कोई काम-धाम न करके हमेशा अपनी बीवी की कमाई पर ही निर्भर रहता है। अगर कभी पत्नी उसे काम करने के लिए जाने को कहती है तो वह उसे मारता-पीटता है। रहमतुल्ला के पास कभी-कभी बीड़ी पीने के लिए पैसे नहीं होते, फिर भी वह बीवी को उसके लिए मारता रहता है। यहाँ लेखक का लक्ष्य समाज में लोगों के अंदर छिपी आलसी प्रवृत्ति को उजागार करना है। जब मनुष्य अपनी आलसी प्रवृत्ति छोड़ देगा तो समाज का कल्याण होगा और परिवार का भी।

मंजूर एहतेशाम ने भी अपने साहित्य में पारिवारिक विघटन का वर्णन किया है। समाज की सभी प्रमुख संस्थाओं में परिवार एक महत्वपूर्ण संस्था है और व्यक्ति समाज का प्रमुख अंग है। व्यक्ति के जीवन में समाज के बाद परिवार को ही सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब तक कोई व्यक्ति उसके परिवार के साथ मिलजुलकर रहता है वह खुश एवं सुखी रहता है। जब वह परिवार से अलग हो जाता है तब उसके लिए परेशानियाँ और चुनौतियाँ भी बढ़ने लगती हैं। लेकिन कभी-कभार जाने-अनजाने में चाहते या ना चाहते हुए भी कई परिवारों में बिखराव या विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसके लिए कई कारण हो सकते हैं जैसे पीढियों की मानसिकता की असमानता, वैचारिक मतभेद, आर्थिक स्थिति का बंटवारा, असफल वैवाहिक जीवन, घरेलु झगडे, बहुविवाह, एक-दूसरों के प्रति अविश्वास, प्रेम भावना की कमी आदि। पारिवारिक विघटन समाज की दृष्टि से परिवार की दृष्टि से एक असामान्य घटना है, लेकिन फिर भी वैचारिक मतभेद के कारण असहनशीलता के कारण पारिवारिक विघटन होते ही रहे हैं और पारिवारों में एकता की भावना भी समाप्त होती हुई नजर आ रही है। पारिवारिक विघटन अथवा पारिवारिक बिखराव की समस्या को मंजूर एहतेशाम ने 'मदरसा' उपन्यास में चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में साबिर अपने परिवार से अलग होकर भोपाल आकर रहता है। उसका परिवार बम्बई में ही रह जाता है। साबिर अपनी माँ से भी नहीं मिलना चाहता है और उससे नफरत करता है। कारण यह था कि वह यतीम है यह बात उसकी माँ ने उससे छुपाई है इसलिए वह अब उसकी माँ से मिलना भी नहीं चाहता है। कुछ साल पहले साबिर को कुछ आश्चर्यजनक बातें पता चल जाती है जैसे कि वह..'यतीम था और तब तक जिन्दगी में जिन्हें अपना सगा पिता समझता रहा वह अम्मा के दूसरे पति और खुद उसके सौतेला बाप था, उसी हिसाब से दोनों छोटी बहनें और यह कि सौतेले बाप की जायदाद में उसका कोई कानूनी हिस्सा नहीं बनता था।7 एक ओर तो साबिर की

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अपनी अम्मा से ताल्लुक खराब हो ही गए थे दूसरी ओर वह अपनी पत्नी मरियम और बिटिया से भी दूर जा चुका था। अर्थात वह परिवार से अलग होकर निराश-हताश होकर अपना जीवन बिताने में मजबूर हो गया था। 'मदरसा' उपन्यास में साबिर के परिवार से अलगाव के बाद व्यक्ति पर चुनौतियां, परेशानियाँ आदि किस प्रकार हावी हो जाती है उसे बताने का प्रयास किया गया है।

'कुछ दिन और' उपन्यास में राजू नामक पात्र भी अन्त में परिवार से अलग हो जाता है। राजू अपनी पत्नी और बेटे अंशुल के साथ रहती है, लेकिन उसे अपने बिजनेस में नुकसान होता है। फिर भी वह कुछ दिन में सब कुछ ठीक हो जाएगा, समझकर ऐसे ही दिन बिताते जाता है। धीरे-धीरे उसके घर की वस्तु बेचता है, उसकी कार बिकती है। वह कर्ज में डूब जाता है। फिर भी वह अपनी पत्नी को कुछ दिन और सब ठीक हो जाएगा ऐसे झूठा दिलासा देते रहता है। उधर राजू के मित्र नारायण और रिज्वी उसकी पत्नी के साथ बदतमीजी करते हैं। उसका शारीरिक शोषण करने का प्रयास करते हैं। राजू भी जब उसकी पत्नी गर्भवती बनती है तब उसका अनैतिक तरह से गर्भपात करवाता है। उस समय उसकी पत्नी की जान जाते-जाते बच जाती है। इतना सब शोषण होने के बाद उसकी पत्नी अपने मायके चली जाती है और जब राजू उसे फिर से अपने घर ले जाने के लिए आता है तब वह कहती है कि "मेरा अब तुमसे कोई संबंध नहीं। तुम चले जाओ यहाँ से प्लीज।"8 आर्थिक परिस्थिति के कारण उनके परिवार का विघटन हो जाता है।

'दास्ताने-ए-लापता' उपन्यास में भी जमीर एहमद के परिवार का विघटन हो जाता है। सन् 1984 की भोपाल गैस घटना के समय जमीर एहमद अपनी बीवी बच्चियों के पास न रककर शराब के नशे में चूर हो जाता है। बहुत दिनों तक घर पर भी नहीं आता है। उसकी पत्नी राहत अपने पति के इस बर्ताव से बहुत क्रोधित हो जाती है और उससे तलाक लेने का निर्णय लेती है। बहुत दिनों बाद जब जमीर घर पर आता है तब राहत उसे तलाक लेने का फैसला सुनाती है और कहती है कि "तो यही फैसला आप तक कानूनी शक्ल में पहुँच जाएगा वैसे मैं चाहती थी कि बगैर पब्लिसिटी के हम यह फैसला कर लेते। आगे आपकी मर्जी है।"9 दास्ताने-ए-लापता पति के गैर जिम्मेदाराना बर्ताव एवं पलायनवादी व्यक्तित्व के कारण पारीवारिक विघटन का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि अब्दुल बिस्मिल्लाह और मंजूर एहतेशाम ने अपने साहित्य में आधुनिक समाज मे टूटते बिखरते परिवार का मार्मिक चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन, हमारी विरासत, पृष्ठ 100
2 अब्दुल बिस्मिल्लाह, जहरबाद, संस्करण 1987, पृष्ठ 7
3 वही
4 अब्दुल बिस्माल्लाह, पृष्ठ 24
5 अब्दुल बिस्मिल्लाह, समर शेष है, सं 1984, पृष्ठ 30
6 वही, पृष्ठ 35
7 मंजूर एहतेशाम, मदरसा, पृष्ठ 13
8 मंजूर एहतेशाम, कुछ दिन और, पृष्ठ 13
9 मंजूर एहतेशाम, दास्तान-ए-लापता, पृष्ठ 223